

## Padma Vibhushan



### **DR. PADMA SUBRAHMANYAM**

Dr. Padma Subrahmanyam is an internationally acclaimed Bharatanrityam dancer, choreographer, researcher, singer, music composer, teacher, author and an Indic scholar.

2. Born on 4 February, 1943, Dr. Subrahmanyam is the President of Nrithyodaya, a charitable institution founded by her father in 1942. She is the Founder Managing Trustee of Bharata Ilango Foundation for Asian Culture (BIFAC) and also a Trustee of Indira Gandhi National Centre for the Arts (IGNCA), New Delhi.

3. Dr. Subrahmanyam is the first to bridge the gap between history, theory and practice of Bharatiya Sastriya Natana. She was the first performing artiste to have successfully received the research degree of Ph.D on "Karanas in Indian Dance and Sculpture", based on Bharatamuni's Natyasastra. Her research led her to evolve her own style of dance, which she named as Bharatanrityam, along with a unique pedagogy. Whereas in post-independence India the regional classical dance forms - Desi were recognised, her work was a revival of the common Bharatiya tradition in technique, called Marga or the path laid down by Bharatamuni.

4. Dr. Subrahmanyam's unsullied devotion to Kanchi Mahaswami, His Holiness Sri Chandrasekharendra Saraswati Swamigal, the 68<sup>th</sup> Sankaracharya of the Kanchi Kamakoti Peetham, has given her immense strength in taking bouquets and brick bats with equanimity, and stick to her view of selfless Nationalism. She was referred to as a "Constructive rebel" by Hon'ble Sri R. Venkatraman, Former President of India. Her unswerving adherence to Bharatiya Samskriti can be seen in her productions and writings. She has been the music composer for all her dance productions, the subjects of which range from Vedic to freedom struggle, Vedanta to love poems, encompassing languages such as Sanskrit, Tamil, Telugu, Kannada, Malayalam, Hindi, Marathi, Bengali and Kashmiri. She has authored several books and is connected with quiet a few Universities. Her tele-film serial "Bharatiya Natyasastra" telecast by Doordarshan in 1992 had great impact on creating an awareness about the common cultural roots of Bharat. She has dedicated her entire research work to the Nation through a 10-1/2 hours documentary series "Karana Ujjivanam" produced by IGNCA and released during Azadi Ka Amrit Mahotsav.

5. Dr. Subrahmanyam's designs of the Karana sculptures for the Uttara Chidambaram Nataraja Mandir built in Satara, Maharashtra at the behest of Kanchi Mahaswami, has tallied with the 9<sup>th</sup> century sculptures later discovered by her at the Siva temple in Prambanan, Indonesia. This inspired her to found the Bharata Ilango Foundation for Asian Culture (BIFAC), a Pan Asian research centre, which houses a memorial shrine for Bharatamuni and a Museum of Asian performing arts.

6. Dr. Subrahmanyam has received more than 150 awards including Padma Shri, Padma Bhushan and Akademi Ratna. She has to her credit several state awards like the Kalaimamani from Government of Tamil Nadu and Kalidas Samman from the Government of Madhya Pradesh. She is the only Indian dancer to receive the Fukuoka Asian Cultural Prize from Japan, given "for her contribution towards harmony and development in Asia". She is also the only performing artiste to be recognised as the 'Fellow of Asiatic Society', Mumbai for academic contribution.

## पद्म विभूषण



### डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम्

डॉ. पद्मा सुब्रह्मण्यम् अंतरराष्ट्रीय स्तर की सुप्रसिद्ध भारतनृत्यम नर्तक, कोरियोग्राफर, शोधकर्ता, गायक, संगीतकार, शिक्षक, लेखक और एक भारतीय विद्वान हैं।

2. 4 फरवरी, 1943 को जन्मी डॉ. सुब्रह्मण्यम अपने पिता द्वारा वर्ष 1942 में स्थापित एक धर्मार्थ संस्था नृत्योदय की अध्यक्ष हैं। वह भारत इलंगो फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर (बीआईएफएसी) की संस्थापक प्रबंधक ट्रस्टी हैं और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए), नई दिल्ली की ट्रस्टी भी हैं।

3. डॉ. सुब्रह्मण्यम भारतीय नाट्य शास्त्र के इतिहास, सिद्धांत और व्यवहार के अंतर को पाटने वाली पहली महिला हैं। वह ऐसी पहली कलाकार थीं, जिन्होंने भरतमुनि के नाट्यशास्त्र पर आधारित "भारतीय नृत्य और मूर्तिकला में करण" पर पीएचडी की शोध डिग्री सफलतापूर्वक प्राप्त की थी। अपने शोध के द्वारा उन्होंने अद्वितीय शिक्षा शास्त्र के साथ नृत्य की अपनी शैली विकसित की जिसे उन्होंने भारतनृत्यम नाम दिया। स्वतंत्र भारत में क्षेत्रीय शास्त्रीय नृत्य के देशज रूपों को मान्यता दी गई थी, जबकि उनके कार्य से आम भारतीय परंपरा की पद्धतियों का पुनरुद्धार हुआ, जिसे मार्ग या भरतमुनि द्वारा प्रशस्त मार्ग कहा जाता था।

4. कांची कामकोटि पीठ के 68वें शंकराचार्य, परम पूज्य श्री चंद्रशेखरेंद्र सरस्वती स्वामीगल के प्रति डॉ. सुब्रह्मण्यम की निर्मल भक्ति ने उन्हें प्रशंसा और आलोचना को समभाव से स्वीकार करने और निस्वार्थ राष्ट्रवाद के अपने विचारों पर टिके रहने की अपार शक्ति दी है। उन्हें भारत के पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री आर. वेंकटरमण, ने "कंस्ट्रक्टिव रेबल" कहा था। भारतीय संस्कृति के प्रति उनकी दृढ़ आस्था उनकी प्रस्तुतियों और लेखन में देखी जा सकती है। वह अपनी सभी नृत्य प्रस्तुतियों की संगीतकार रही हैं, जिनके विषय वैदिक से लेकर स्वतंत्रता संग्राम, वेदांत से लेकर प्रेम कविताएं रहे हैं और ये रचनाएं संस्कृत, तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम, हिंदी, मराठी, बंगाली और कश्मीरी भाषा में की गई हैं। उन्होंने कई किताबें लिखी हैं और वे कुछ विश्वविद्यालयों से जुड़ी हुई हैं। भारत की साझी सांस्कृतिक जड़ों के बारे में जागरूकता पैदा करने के बारे में वर्ष 1992 में दूरदर्शन द्वारा प्रसारित उनके टेली-फिल्म धारावाहिक "भारतीय नाट्यशास्त्र" ने काफी प्रभाव डाला। उन्होंने आजादी का अमृत महोत्सव के दौरान जारी की गई इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र द्वारा निर्मित 10-1/2 घंटे की वृत्तचित्र शृंखला "करण उज्जीवनम" के माध्यम से अपना पूरा शोध कार्य राष्ट्र को समर्पित किया है।

5. कांची महास्वामी के आदेश पर महाराष्ट्र के सतारा में निर्मित उत्तर चिदंबरम नटराज मंदिर के लिए डॉ. सुब्रह्मण्यम द्वारा बनाई गई करण मूर्तियों का डिजाइन 9वीं शताब्दी की मूर्तियों से मेल खाता है, जिन्हें बाद में इंडोनेशिया के प्रम्बानन में शिव मंदिर में उनके द्वारा खोजा गया था। इसने उन्हें भारत इलंगो फाउंडेशन फॉर एशियन कल्चर (बीआईएफएसी), अखिल एशियाई अनुसंधान केंद्र की स्थापना के लिए प्रेरित किया, जिसमें भरतमुनि की स्मृति में पुण्य स्थल बनाया गया है और यहां एशियाई प्रदर्शन कला संग्रहालय है।

6. डॉ. सुब्रह्मण्यम को पद्म श्री, पद्म भूषण और अकादमी रत्न सहित 150 से अधिक पुरस्कार मिले हैं। उन्हें तमिलनाडु सरकार से कलाईमामनी पुरस्कार और मध्य प्रदेश सरकार से कालिदास सम्मान जैसे कई राज्य पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। वह जापान से फुकुओका एशियाई सांस्कृतिक पुरस्कार प्राप्त करने वाली एकमात्र भारतीय नर्तक हैं, जो उन्हें "एशिया में सद्भाव और विकास में उनके योगदान के लिए" प्रदान किया गया है। वह अकादमिक क्षेत्र में योगदान के लिए 'फेलो ऑफ एशियाटिक सोसाइटी', मुंबई का सम्मान पाने वाली एकमात्र कलाकार भी हैं।